

11. साहसी सुनीता

सोचो-बोलो



प्रश्न :

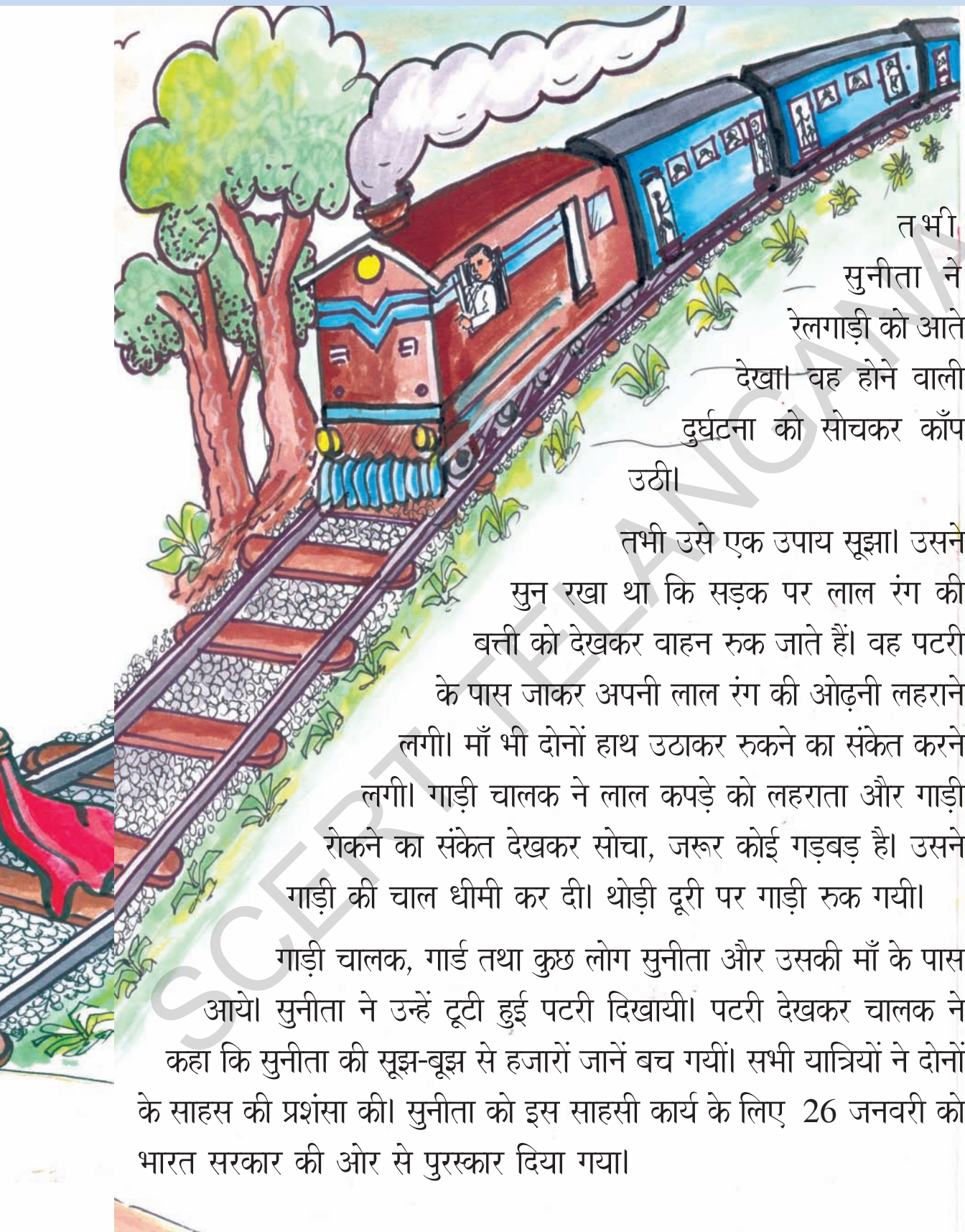
1. चित्र में क्या दिखायी दे रहा है?
2. लड़की क्या सोच रही होगी?
3. साहस किसने किया? कैसे?

छात्रों के लिए सूचनाएँ :

1. पाठ के चित्र देखिए। चित्र के आधार पर कल्पना कीजिए कि पाठ में क्या बताया गया होगा?
2. यह पाठ पढ़िए। समझ में न आने वाले शब्द और वाक्य रेखांकित कीजिए।
3. समझ में न आने वाले शब्दों और वाक्यों के बारे में मित्रों से चर्चा कीजिए।
4. समझ में न आने वाले शब्दों के अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़िए।

सुनीता घास लेकर घर जा रही थी। उसके साथ माँ भी थी। रास्ते में रेल की पटरी थी। वहाँ से रेलगाड़ी के निकलने का समय हो गया था। सुनीता और उसकी माँ पटरी के पास रुक गयीं। तभी सुनीता की नज़र रेल की पटरी पर पड़ी, उसे वह पटरी टूटी हुई लगी। सुनीता की माँ पटरी देखकर बोली - “यह पटरी तो टूटी है!” दोनों इधर-उधर देखने लगीं। रेलवे स्टेशन भी वहाँ से दूर था।





तभी
सुनीता ने
रेलगाड़ी को आते
देखा। वह होने वाली
दुर्घटना को सोचकर काँप
उठी।

तभी उसे एक उपाय सूझा। उसने
सुन रखा था कि सड़क पर लाल रंग की
बत्ती को देखकर वाहन रुक जाते हैं। वह पटरी
के पास जाकर अपनी लाल रंग की ओढ़नी लहराने
लगी। माँ भी दोनों हाथ उठाकर रुकने का संकेत करने
लगी। गाड़ी चालक ने लाल कपड़े को लहराता और गाड़ी
रोकने का संकेत देखकर सोचा, जरूर कोई गड़बड़ है। उसने
गाड़ी की चाल धीमी कर दी। थोड़ी दूरी पर गाड़ी रुक गयी।

गाड़ी चालक, गार्ड तथा कुछ लोग सुनीता और उसकी माँ के पास
आये। सुनीता ने उन्हें टूटी हुई पटरी दिखायी। पटरी देखकर चालक ने
कहा कि सुनीता की सूझ-बूझ से हजारों जानें बच गयीं। सभी यात्रियों ने दोनों
के साहस की प्रशंसा की। सुनीता को इस साहसी कार्य के लिए 26 जनवरी को
भारत सरकार की ओर से पुरस्कार दिया गया।



सुनो-बोलो

1. सुनीता पटरी के पास क्यों रुक गयी?
2. चालक के लिए लाल और हरा झंडा किसके सूचक हैं?



पढ़ो

(अ) उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

1. सुनीता घास लेकर जा रही थी। (घर / शहर)
2. स्टेशन वहाँ से दूर था। (बस / रेलवे)
3. वह पटरी के पास जाकर लहराने लगी। (ओढ़नी / झंडा)
4. भारत सरकार ने के दिन सुनीता को पुरस्कार दिया। (15 अगस्त / 26 जनवरी)



लिखो

1. ट्राफिक सिग्नल्स (यातायात नियम) के बारे में तुम क्या जानते हो? अपने शब्दों में लिखिए।

.....



शब्द भंडार

रेलवे स्टेशन से जुड़े कुछ शब्द लिखिए।

1..... 2..... 3..... 4.....





भाषा की बात

लड़का खेलता है।

माँ भोजन बनाती है।

बालक कहानी पढ़ता है।

वह कविता लिखती है।

ऊपर दिये गये वाक्यों में आना, दौड़ना, लिखना, पढ़ना, बनाना, खाना आदि शब्द संज्ञा या सर्वनाम द्वारा किये गये कार्य को बतलाते हैं। ऐसे शब्दों को क्रिया कहते हैं।



सृजनात्मक अभिव्यक्ति

सुनीता को उसके साहसी कार्य के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार दिया गया। उसे बधाई देते हुए दो वाक्य लिखिए।

.....

.....

.....



क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. मैं पाठ के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ।		
2. मैं पाठ का सारांश अपने शब्दों में बता सकता/सकती हूँ।		
3. मैं पाठ के शब्दों से वाक्य बना सकता/सकती हूँ।		

मन का साहस विश्वास बढ़ाता है।

जानिए...

कोई भी बच्चा 'चाइल्ड लाइन 1098' को फ़ोन करके नियम तोड़ने वाले के खिलाफ़ शिकायत दर्ज करा सकता है।





घंटे की आवाज़

पढ़ो-आनंद लो

पुराने ज़माने की बात है। एक था नरसापुर नगर। वह चारों ओर से पहाड़ियों और जंगलों से घिरा था। कुछ दिनों से लोग परेशान थे। जंगल से रह-रहकर घंटा बजने की आवाज़ आती।



लोग हैरान होकर एक-दूसरे से पूछते- “भाई, यह आवाज़ कहाँ से आ रही है? हमें तो बहुत डर लग रहा है।”



रात होने पर घंटे की आवाज़ और तेज़ हो जाती। लोग नींद छोड़कर रात-रात भर जागने लगे। न जाने यह आवाज़ कहाँ से आ रही है? लगता है कुछ बुरा होने वाला है।



फिर एक मुसाफिर ने कहा- जंगल में एक भयानक राक्षस रहता है। वही घंटा बजाता रहता है।



अब लोग और भी डर गये। सब मिलकर राजा के पास गये। लोगों ने कहा- “महाराज, हमें घंटा बजाने वाले राक्षस से बचाइए।”



उन्होंने कहा- “जो भी घंटा बजाने वाले राक्षस से मुक्ति दिलाएगा उसे ढेर सारा इनाम दिया जाएगा।”



उसी नगर में होशियार लड़की रहती थी। वह राजा के पास गयी। उसने कहा- “महाराज, मैं घंटा बजाने वाले राक्षस का मुकाबला करूँगी।”



सब लोग आश्चर्यचकित थे। लड़की जंगल गयी। वहाँ उसने काँटे और झाड़ियाँ साफ कर एक झोपड़ी बनायी। वहाँ पशु-पक्षी आने लगे।



एक दिन घंटे की आवाज़ सुनायी दी, तो लड़की उसी दिशा की ओर दौड़ी। देखा कि सामने बंदरों का झुंड है। उन्हीं के बीच एक बड़ा-सा घंटा पड़ा है। बंदर रह-रहकर उसे बजाते।



लड़की ने एक थैले में ढेर सारे फल भरकर बंदरों के आगे डाल दिये। सब बंदर फल खाने में लग गये।

लड़की ने घंटा उठाया और खुशी-खुशी घर पहुँची। वह समझ गयी थी कि घंटे वाले राक्षस की बात झूठी है। वास्तव में घंटा बंदर ही बजाते थे।

उस दिन के बाद से घंटा बजने की आवाज़ किसी ने नहीं सुनी।



होशियार लड़की को राजा की ओर से ढेर सारे उपहार मिले। सब ने उसकी होशियारी और हिम्मत की प्रशंसा की।